शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कबीर का अक्खड़पन और हिप्पोक्रेटिक समाज

संगम वर्मा
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सतीश चन्द्र धवन राजकीय महाविद्यालय
लुधियाना, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

मध्यकालीन संत कवियों में कबीर का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अपने युग में जैसी क्रांतिकारी विचारधारा कबीर के यहाँ देखने को मिलती है, वह बाद के किसी कवि में देखने को नहीं मिलती। कबीर जैसा अक्खड़ कवि पूरे मध्ययुग में ढूँढना मुश्किल है। कबीर ने अपनी आध्यात्मिक विचारधारा का विकास भी इसी अक्खड़पन से किया है। कबीर ने जिस ज्ञान को प्राप्त कर लिया था, उसके बाद जब उनकी दृष्टि लोकजीवन की ओर उठी, तब उन्होंने लोगों की अंधश्रृद्धा पर अपनी वाणी से प्रहार किया। प्रस्तुत शोध पत्र में कबीर की अक्खड़वाणी पर विचार किया गया है।

भूमिका

निर्गुण भक्ति काव्यधारा में कबीर दास जी का स्थान अन्यतम है। उन्होंने शास्त्रसम्मत सिद्धांतों को जनभाषा में व्यक्त कर तत्कालीन समाज को दिशा दिखाने का महत कार्य किया। उनकी वाणी ज्ञान से दग्ध है। वह व्यक्ति के ह्रदय और मस्तिष्क पर प्रहार कर विचार करने पर मजबूर करती है। उनके युग में पनपे पाखण्ड को वे एक क्षण भी सहन नहीं कर सकते थेए इसलिए उन्हें विद्रोही कवि भी कहा जाता है। उनकी दृष्टि में केवल मंदिर में मूर्ति के भीतर ईश्वर को मानना और मस्ज़िद के भीतर ही ख़ुदा को स्वीकार करना ईश्वर व ख़ुदा दोनों की तौहीन है। इनके विचार से तो ईश्वर घट.घट व्यापी है। उन्होंने मुसलमानों के ज़ोर से बाँग देने रोज़ा रखने आदि कृत्यों पर तीखा प्रहार किया है यथा .

काँकर पाथर जोरि कै मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।।
दिन भर रोज़ा रहत है रात हनत हैं गाय।
यह तो ख़ून वह बन्दगी कैसे खुशी खुदाय।।1

कबीर की वाणी में अक्खड़पन

कबीर सबसे अधिक बल कथनी और करनी की एकरूपता पर देते हैं। आज हमारा समाज हिप्पोक्रेसी के दलदल में फँसा हुआ है। हमारे राजनेताओं से लेकर बुद्धिजीवियों तक और परिवार से लेकर समाज तक हर व्यक्ति की कथनी और करनी में ज़मीन आसमान का अंतर दिखाई पड़ता है। उनकी कथनी यदि रूढ़िवादियों का विरोध करती है तो कबीर की करनी भी इसी तथ्य को अभिव्यक्त करती है। कबीर उम्र.भर जिन अंधविश्वासों का विरोध करते रहे अपने अंतिम समय से भी वह पीछे नहीं हटे। कबीर का एक दोहा हिप्पोक्रेटिक समाज के लिए एक सन्देश है। यथा .

कथनी मीठी खांड सी ए करनी विष की लोय।
कथनी तज करनी करे ए नर नारायण होय।।2

यह कैसी विडम्बना है कि कबीर ने जो कहा वह अपने समाज के अनपढ़ए रूढ़िग्रस्त लोगों और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पढ़े लिखे विद्वानोंए पंडितों की 'हिप्पोक्रेसी' को सामने रखकर कहा और आज भी वो सब ज्यों का त्यों हमारे पढ़े लिखे , डिग्रीधारी, तथाकथित आधुनिक विकसित समाज पर लागू है। इससे बड़ा व्यंग्य समाज पर और क्या हो सकता है कि एक मध्यकालीन संत 21वीं सदी के साधुओं , विद्वानों की करनी की पोल खोलता हो और लोगों के पाखण्ड पर प्रहार करता हो। इस सदी तक आते आते जहाँ निरक्षरता घटी है , वहाँ पाखण्डी साधु.सन्तों, मन्दिरों-मस्जिदों की में वृद्धि हुई है। नेताओं से लेकर सामान्यजन तक की कथनी .करनी का विभेद इतना बढा है कि अब इसे पाटना शायद कठिन हो। कह सकते हैं कि हम एक 'हिप्पोक्रेट' समाज में रहते हैं। ऐसे में कबीर की प्रासंगिकता को कौन चुनौती दे सकता है। कबीर एक आईना है जिसमें हम अपना वीभत्स चेहरा देख सकते हैं। कबीर एक ऐसा खरा मापदंड है जिसके आलोक में हम अपने झूठे समाज के रोएं.रेशे को पहचान और परख सकते हैं।

कबीर लोगों को अनेक प्रकार से समझाते. हैं। लोग गाय की पूँछ पकड़कर भवसागर पार करने के भ्रम में पड़े हुए हैं या फिर काशी में शरीर त्यागने को मुक्ति.प्राप्ति का द्वार मान बैठे है। यदि काशी में मरकर सभी मुक्त हो जाते तो फिर प्रभु की कृपा की क्या आवश्यकता थी। कबीर के अनुसार जिस प्रकार जल में प्रविष्ट जल पुनः जल से पृथक् नहीं हो सकता , उसी प्रकार शरीर त्यागने पर परमात्मा में प्रविष्ट आत्मा पुनर्जन्म के रूप में पृथक् नहीं हो सकता। अतः कोई पुनर्जन्म के भ्रम में न पडे। जिसके हृदय में राम का निवास है उसके लिए काशी और ऊसर मगहर , मगध गृह दोनों बराबर हैं। यथा :

लोका मति के भोरा रे।
जो कासी तन तजै कबीरा तो रामहि कहा निहोरा।
ज्यूँ जल मैं जल पैसि न निकसैए यूँ ढुरि मिलै जुलाहा॥
राम भगति परि जाकौ हित चितए ताकौ अचिरज काहा॥
कहै कबीर सुनहु रे संतो भ्रमि परे जिनि कोई।
जस कासी तस मगहर ऊसरए हिरदैं राम सति होई॥ 3

सामाजिक क्षेत्र में कबीर के विचार बड़े क्रान्तिकारी हैं। वे वर्गीय , जातीय, सम्प्रदायगत भेदभाव के कट्टर शत्रु हैं। कबीर मनुष्य , मनुष्य के मध्य समानता के पक्षधर हैं। ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र ऊँच-नीच आदि के भेदभाव को सहन नहीं करते। वह व्यंग्य और तर्क से इस प्रवृत्ति को निरर्थक सिद्ध करते हैं यथा

भूला भरमि परै जिनि कोई।
हिन्दू तुरुक झूठ कुल सोई।।4

कबीरकालीन समाज में निम्नवर्ग जन की हालत बहुत ही दयनीय तथा ख़राब थी क्योंकि उसके पास धन नहीं था, अतः समाज में उसका कोई आदर नहीं था। यथा :

निर्धन आदर कोई न देई। लाख जतन करै ओहु चित न धरेइ।।
जो निर्धन सरधन कै जाई। आगे बैठा पीठ फिराई।।
जो सरधन निर्धन कै जाई। दीया आदर लिया बुलाई।।5

इस निम्न वर्ग में हिन्दू नहीं थे , मुसलमान भी थे। दोनों वर्गों की आर्थिक -सामाजिक हालत एक ही समान थी। कबीर मानवतावादी विचारधारा के प्रति गहन आस्थावान् थे। वह युग अमानवीयता का था, इसीलिए कबीर ने मानवता से परिपूर्ण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भावनाओं, संवेदनाओं व चेतना का प्रसार करने का प्रयास किया। हकीकत तो यही है कि कबीर वर्ग.संघर्ष के विरोधी थे। वे समाज में व्याप्त शोषक-शोषित का भेद मिटाना चाहते थे। जाति प्रथा का विरोध करके वे मानव जाति को एक.दूसरे के समीप लाना चाहते थे। वास्तव में कबीर ने युग-युग से प्रताड़ित, पीड़ित समाज के निम्न वर्ग को अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा ऊपर उठाया तथा उनमें आत्मसम्मान जगाया। इसीलिए डॉ. ताराचंद का कथन है. "कबीर के शिष्यों की संख्या उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है , जितनी कि उनका प्रभाव। यथार्थ तो यह है कि विषम परिस्थितियों में कबीर के जन्म ने उन्हें हिन्दू-मुसलमानों की समान रूप से आलोचना करने में समर्थ बनाया था। डॉ. ताराचंद का कहना है. प्रेम के ऐसे धर्म का जो सभी धर्मों और जातियों को संगठित कर दें, ऐसे विचार का प्रचार करना ही कबीर के जीवन का लक्ष्य था। उन्होंने हिन्दुत्व एवं इस्लाम के उन तत्त्वों को जो कि आध्यात्मिक कल्याण के लिए नहीं थे , अस्वीकार कर दिया। कबीर भावुक थे , इसीलिए उनसे समाज की दशा देखी नहीं गई। बाह्य आडम्बर, असत्य, अनाचार, व्यभिचार तथा वर्ण भेद के प्रति उनकी प्रतिक्रिया एवं क्रांति के समान थी। वे अहिंसक क्रांति की भावना द्वारा राजनीतिक, सामाजिक , धार्मिक तथा आर्थिक सभी क्षेत्रों में एक क्रांति पैदा करना चाहते थे , उनके पास क्रांति का अस्त्र व्यंग्य था। इसीलिए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार .हिन्दी में आज तक ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। वस्तुतः कबीर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त धर्म की अकर्मण्यता से समाज को हटाकर उसे सहज बनाकर जन साधारण के लिए ग्रास बनाया।

कबीर ने सामाजिक व्यवस्था को विकृत करने वाली रूढ़ियों , पाखण्ड , रीति -रिवाजों और मिथ्याचार के विरूद्ध जनता में विद्रोह की भावना उत्पन्न कर दी। संत कबीर ने हिन्दू तुरक का करता एकै और राम.रहीम सबनु मं दीठा कहकर हिन्दू-मुसलमान के भेद को मिटाने तथा दोनों को समीप लाने का प्रयास किया। कबीर ने अनेक व्यावहारिक उदाहरण समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर भजन-पूजन, नमाज-रोजा आदि साधनों की अनेकता और साध्य की एकता का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए धर्म निरपेक्षता को आधार प्रदान करते हुए कहा है :.

पूरब दिशा हरी को बासा , पश्चिम अल्लह मुकामा।
दिल में खोजि दिलहि मा खोजो इहै करीमा रामा॥

कबीर ने जिस सत्य को पाया है वह परम् तत्व है, इसीलिए कबीर आज भी प्रासंगिक हैं। कल भी प्रासंगिक रहेंगे। समाज के आधुनिक रूप हिप्पोक्रेटिक पर अपनी व्यंग्यबाणों की छीटांकशी करते हुए अपने अक्खड़पन का परिचय देते हैं। कबीर मानव. -मानव के बीच खड़ी दीवार को ध्वस्त करना भली.भांति जानते हैं। उन्हें न जाति-पांति का भेद स्वीकार है न ऊँच -नीच की भावना। न वह साम्प्रदायिकता को मान्यता देते हैं न वर्ण व्यवस्था की अव्यवस्था को न वह मन्दिर-मस्ज़िद का भेद स्वीकार ते हैं न राम.रहीम की भिन्नता को। जब आराध्य एक है सब में एक ही आत्मा है तो उनके अनुयायी अलग अलग कैसे हो सकते हैं। यथा :

काशी काबा एक है, एकै राम रहीम
मैदा इक पकवान बहु बैठ कबीरा जीम। 6

कबीर का काव्य अजायबघर की वस्तु बन जाता यदि हमारे समाज में जाति.भेद, ऊँच-नीच, श्रेष्ठ-

निकृष्ट सामाजिक विषमताएँ , असमानताएँ समाप्त हो जातीं। जब जातिवाद , नस्ल.भेद, रंग. भेद, अर्थ.भेद इक्कीसवीं सदी में भी मौजूद हैं , अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बढ़ रहे हैं , साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं , निम्न वर्गों, जातियों का उत्पीड़न बढ़ रहा है , तंत्र.मन्त्रवाद उफ़ान पर हैं, संतों-महंतों का जाल फ़ैल रहा है वहां कबीर की विचारधारा आधुनिक समाज को मार्ग दिखाने में सक्षम है। वे हमारे समय में अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं जहाँ व्यक्ति नाम से नहीं , जाति से अधिक पहचाना जाता है। हमारे संबोधनों में जाति अधिक रहती है , नाम बाद में। घरों के बाहर लटकती तख़्तियों पर जाति चमकती है पूरी तामझाम से।

निष्कर्ष

आज जब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्पन्न आत्म धिक्कार और मूल्यांधता ने हमारे समय , समाज, चिंतन और सृजन को घेर रखा है। जब कोई विचार .विचार न रहा , बुद्धिजीवी. बुद्धिजीवी न रहा, सारी विचारधाराओं का अंत हो रहा है , जब खण्डित चेतना , खण्डित यथार्थ , खण्डित जीवन.दृष्टि, चिन्तनधारा का रूप ले रहे हैं , जब मनुष्य को संसाधन मानकर उसका उपयोग किसी बिकाऊ माल की तरह किया जा रहा है , जब बाजार केन्द्रित अर्थ व्यवस्था ने संस्कृति दर्शन साहित्य को हाशिये पर धकेल दिया है , जब विकृति ही अपसंस्कृति की पहचान बन गई है , जब समाज साहित्य में प्रायः खोखला , विकृत , कामचोर, भ्रष्ट , पस्त और कामी व्यक्ति उभर रहे हैं। कबीर का साहित्य विगत सैकड़ों वर्षों से हमें सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत है । उन्होंने कोरे किताबी ज्ञान की निस्सारता अपने जीवन से सिद्ध की। ऐसी स्थिति में कबीर का ही सहारा पर्याप्त है।

सन्दर्भ.सूची

1 डॉ. राजेन्द्र टोकी , कबीर दृष्टि.प्रतिदृष्टि , विमल बुक्स, सोनिया विहार , दिल्ली.94 , प्रथम संस्करण.2009 पृष्ठ.5

2 वही, पृष्ठ.7

3 डॉ . युगेश्वर , कबीर समग्र , हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स, प्रा .लि.वाराणसी, 1996 , साखी पद. 402, पृष्ठ.548

4 डॉ . राजेन्द्र टोकी , कबीर दृष्टि.प्रतिदृष्टि विमल बुक्स, सोनिया विहार, दिल्ली.94 , प्रथम संस्करण.2009 पृष्ठ.27

5 डॉ . राजेन्द्र टोकी , कबीर दृष्टि प्रतिदृष्टि, विमल बुक्स, सोनिया विहार, दिल्ली.94 प्रथम संस्करण.2009 पृष्ठ.38

6 डॉ . युगेश्वर , कबीर समग्र , हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स, प्रा.लि., वाराणसी, 1996, पृष्ठ.470